[३५] श्री बृहत्कल्प (छेद)सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“बृहत्कल्प” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर **(M.Com., M.Ed., Ph.D.)**

12/02/2015, गुरुवार, २०७१ महा कृष्ण ८

jain_e_library’s Net Publications

आगम (३५)	“बृहत्कल्प” - छेदसूत्र-२ (मूलं) ---------- उद्देश: [-] ---------- मूलं [-] ----------
प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [–]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं 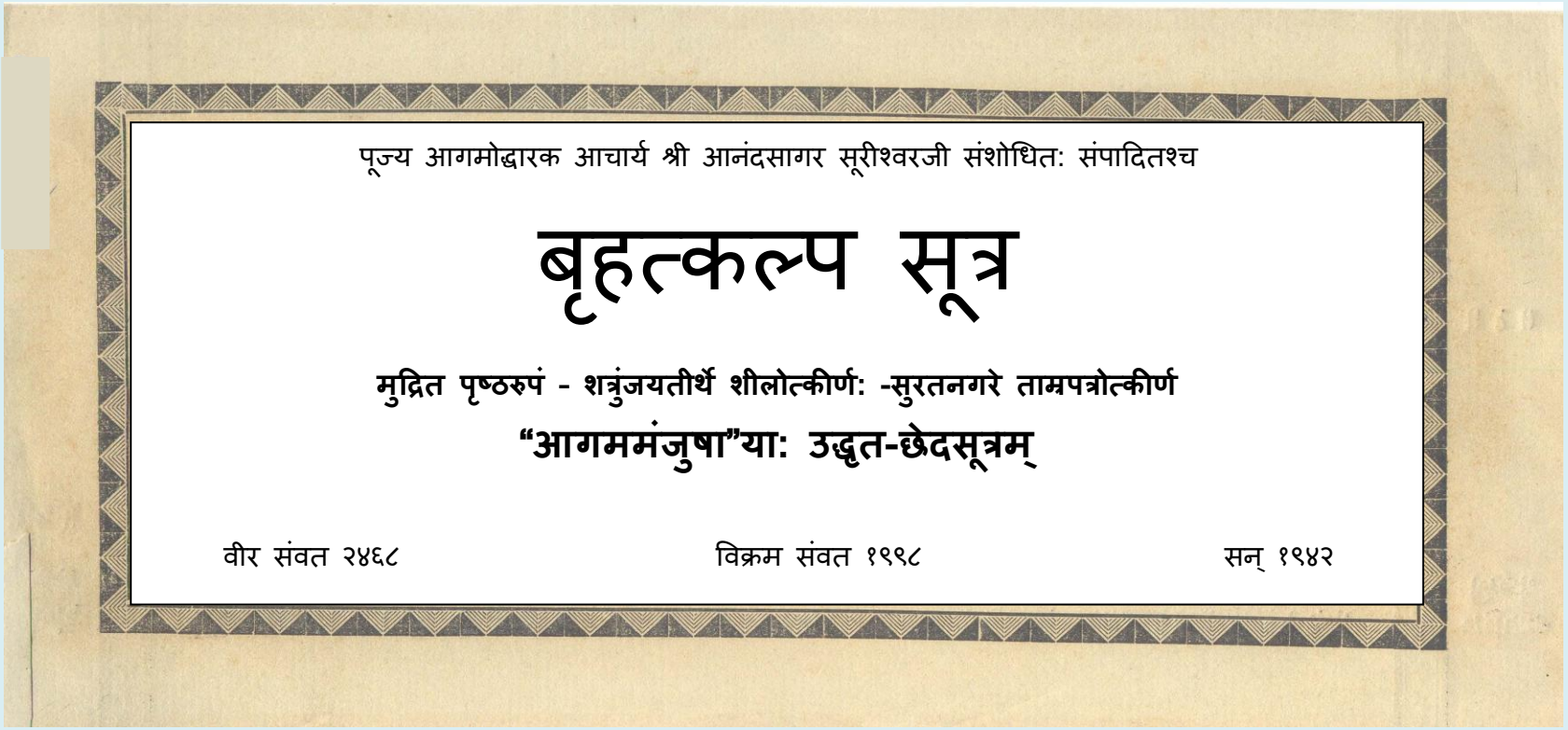 पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी संशोधित: संपादितश्च बृहत्कल्प सूत्र मुद्रित पृष्ठरुपं - शत्रुंजयतीर्थे शीलोत्कीर्ण: -सुरतनगरे ताम्रपत्रोत्कीर्ण “आगममंजुषा”या: उद्धृत-छेदसूत्रम् वीर संवत २४६८ विक्रम संवत १९९८ सन् १९४२
	बृहत्कल्प -छेदसूत्रस्य “टाइटल पेज”

मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:	मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:	मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:
०००१	प्रथम:	००४	००५९	द्वितिय:	००६	०११८	तृतीय:	००७
०१९७	चतुर्थ:	००८	०३१४	पंचम:	०१०	०३९३	षष्ठ:	०१२

['बृहत्कल्प' - मूलं] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

पूज्यपाद आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) के संशोधन एवं संपादन से सन १९४२ (विक्रम संवत १९९८) में ४५ आगम+वैकल्पिक दो आगम+ पांच निर्युक्तिओ एवं कल्पसूत्र को मिलाकर **"आगममंजुषा"** नाम से करीब १३०० पृष्ठ छपे, जिसकी साइज़ 20x30 इंच थी | इस संपादनमें ६+१ छेदसूत्र भी पूज्यश्रीने मुद्रित करवाए | यहीं **"आगममंजुषा"** पूज्यश्री की प्रेरणा से श्री शत्रुंजयतीर्थ की तलेटीमें आगममंदिरमें आरस के पट्ट पर भी उत्कीर्ण हुई और सुरतनगरमे ताम्रपत्र पर भी अंकित हुई | हमने उसी ६+१ छेदसूत्रो को फोटो-स्केन करवाया, फोटो-स्केन कोपी को पहले ' A-4' साइज़ मे लेजाकर अलग-अलग ६+१ किताबो के रुपमे रखा, फ़िर उसी को इन्टरनेट पर भी अपलोड करवाया और हमारे प्रकाशनो कि DVD मे भी उनको स्थान दे दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा आदर देखकर हमने इसी ६+१ छेदसूत्रो को प्रत-स्वरुपमें यहां सम्मिलित कर दिया, ताँकी भविष्यमे को यह् न कहे कि इस संपुटमें ३९ आगम हि है, और ६ आगम कम है |

एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवा कर हमने बीचमे पूज्यश्री संपादित पृष्ठो को ज्यों के त्यों रख दिए, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर अध्ययन या उद्देशक तथा मूलसूत्र या गाथाजो जहां प्राप्त है उसके क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन या उद्देशक तथा सूत्र या गाथा चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **||-||** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीँ सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है| **.....मुनि दीपरत्नसागर.....**

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] "बृहत्कल्प" मूलं

आगम (३५)	“बृहत्कल्प” - छेदसूत्र-२ (मूलं) ---------- उद्देश: [१] -- मूलं [१] ----------
प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

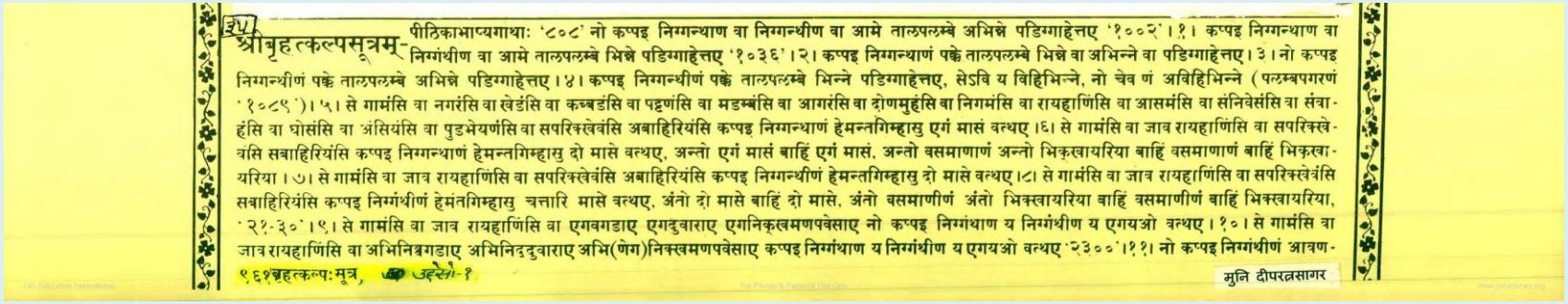

[३५]
श्रीबृहत्कल्पसूत्रम्- पीठिकाभाष्यगाथा: ‘८०८’ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा आमे तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए ‘१००२’।१। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा आमे तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए ‘१०३६’।२। कप्पइ निग्गन्थाणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने वा अभिन्ने वा पडिग्गाहेत्तए।३।नो कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए।४। कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए, सेऽवि य विहिभिन्ने, नो चेव णं अविहिभिन्ने (पलम्बपगरणं ‘१०८९’)।५। से गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा पट्टणंसि वा मडम्बंसि वा आगरंसि वा दोणमुहंसि वा निगमंसि वा रायहाणिंसि वा आसमंसि वा संनिवेसंसि वा संबाहंसि वा घोसंसि वा अंसियंसि वा पुडभेयणंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तगिम्हासु एगं मासं वत्थए।६। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए, अन्तो एगं मासं बाहिं एगं मासं, अन्तो वसमाणाणं अन्तो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणाणं बाहिं भिक्खायरिया।७। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थीणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए।८। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गंथीणं हेमंतगिम्हासु चत्तारि मासे वत्थए, अंतो दो मासे बाहिं दो मासे, अंतो वसमाणीणं अंतो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणीणं बाहिं भिक्खायरिया, ‘२१-३०’।९। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ निग्गंथाण य निग्गंथीण य एगयओ वत्थए।१०। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिदुवाराए अभि(णेग)निक्खमणपवेसाए कप्पइ निग्गंथाण य निग्गंथीण य एगयओ वत्थए ‘२३००’।११। नो कप्पइ निग्गंथीणं आवण-

९६१बृहत्कल्पःसूत्र, उद्देसो-१

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशक: १ आरब्ध:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] "बृहत्कल्प" मूलं

प्रत सूत्रांक [१२]

दीप अनुक्रम [१२]

गिहंसि वा रत्थामुहंसि वा सिङ्घाडगंसि वा तियंसि वा चउक्कंसि वा चच्चरंसि वा अंतरावणंसि वा वत्थए। १२। कप्पइ निग्गंथाणं आवणगिहंसि वा जाव अंतरावणंसि वा वत्थए '२३३०'।१३। नो कप्पइ निग्गंथीणं अवङ्गुयदुवारिए उवस्सए वत्थए, एगं पत्थारं अंतो किच्चा एगं पत्थारं बाहिं किच्चा ओहाडियचिलिमिलियागंसि एवण्हं कप्पइ वत्थए '२३५७' । १४। कप्पइ निग्गंथाणं अवङ्गुयदुवारिए उवस्सए वत्थए '२३६६'। १५। कप्पइ निग्गंथीणं अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३६९'। १६। नो कप्पइ निग्गंथाणं अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३७५'।१७। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चेलचिलिमिलियं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३८७'।१८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा दगतीरंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निदाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारमाहारेत्तए वा उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिंघाणं वा परिट्ठवेत्तए, सज्झायं वा करेत्तए, धम्मजागरियं वा जागरित्तए, झाणं वा झाइत्तए, काउस्सग्गं वा करित्तए, ठाणं वा ठाइत्तए '२४३०'।१९। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए।२०। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए '२४३८'।२१। नो कप्पइ निग्गंथीणं सागारियं अनिस्साए वत्थए।२२। कप्पइ निग्गंथीणं सागारियनिस्साए वत्थए '२४५०'।२३। कप्पइ निग्गंथाणं सागारियनिस्साए वा अनिस्साए वा वत्थए '२४५३'।२४। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारिए उवस्सए वत्थए, कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अप्पसागारिए उवस्सए वत्थए '२५५५'।२५। नो कप्पइ निग्गंथाणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ।२६। कप्पइ निग्गंथाणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए।२७। नो कप्पइ निग्गंथीणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए।२८। कप्पइ निग्गंथीणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए '२५८७'।२९। नो कप्पइ निग्गंथाणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए।३०। कप्पइ निग्गंथीणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए '२६३३'।३१। नो कप्पइ निग्गंथाणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं वत्थए ।३२। कप्पइ निग्गंथीणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं वत्थए '२६८०'।३३। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता अविओसवियपाहुडे इच्छाए परो आढाएज्जा इच्छाए परो णो आढाएज्जा इच्छाए परो अब्भुट्टेज्जा इच्छाए परो नो अब्भुट्टेज्जा इच्छाए परो वंदेज्जा इच्छाए परो नो वंदेज्जा इच्छाए परो संभुञ्जेज्जा इच्छाए परो नो संभुञ्जेज्जा इच्छाए परो संवसेज्जा इच्छाए परो नो संवसेज्जा इच्छाए परो उवसमेज्जा इच्छाए परो नो उवसमेज्जा, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं, से किमाहु भंते?, उवसमसारं खु सामण्णं '२७३८'।३४। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वासावासासु चारए।३५। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा हेमंतगिम्हासु चारए '२७६३'।३६। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेत्तए, जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेइ करेंतं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२७९५'।३७। निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केई वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं गहाय आयरियपायमूले ठवेत्ता दोच्चंपि उग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '२८१८'।३८। निग्गंथं च णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतं समाणं केइ वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं० '२८१९'।३९। निग्गंथिं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं तं चेव णवरं पवत्तिणीपायमूले ठवेत्ता०।४०। निग्गंथिं च णं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा जाव परिहारं परिहरित्तए '२८४०'।४१। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा असणं वा० पडिग्गाहेत्तए।४२। नन्नत्थ एगेणं पुव्वपडिलेहिएणं सेज्जासंथारएणं '२८७३'।४३। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा पडिग्गाहेत्तए '३००५'।४४। नन्नत्थ एगाए हरियाहडियाए, सावि य परिभुत्ता वा धोया वा रत्ता वा घट्टा वा मट्ठा वा संपधूमिया वा '३०४२'।४५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा राओ वा वियाले वा अद्धाणगमणं एत्तए '३१४२'।४६।० संखडिं वा संखडिपडियाए अद्धाणगमणं एत्तए '३२१०'।४७। नो कप्पइ निग्गन्थस्स एगाणियस्स राओ वा वियाले वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पबिइयस्स वा अप्पतइयस्स वा राओ वा वियाले वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा '३२२५'।४८। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पतइयाए वा अप्पचउत्थीए वा राओ वा वियाले वा बहिया विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा '३२४३' ।४९। पुरत्थिमेणं कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा जाव अङ्गमगहाओ एत्तए दक्खिणेणं० जाव कोसम्बीओ एत्तए पच्चत्थिमेणं० जाव थुणाविसयाओ एत्तए उत्तरेणं जाव

मुनि दीपरत्नसागर

आगम (३५)	“बृहत्कल्प” - छेदसूत्र-२ (मूलं) ---------- उद्देश: [१] -- मूलं [५०] ----------
प्रत सूत्रांक [५०] दीप अनुक्रम [५०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

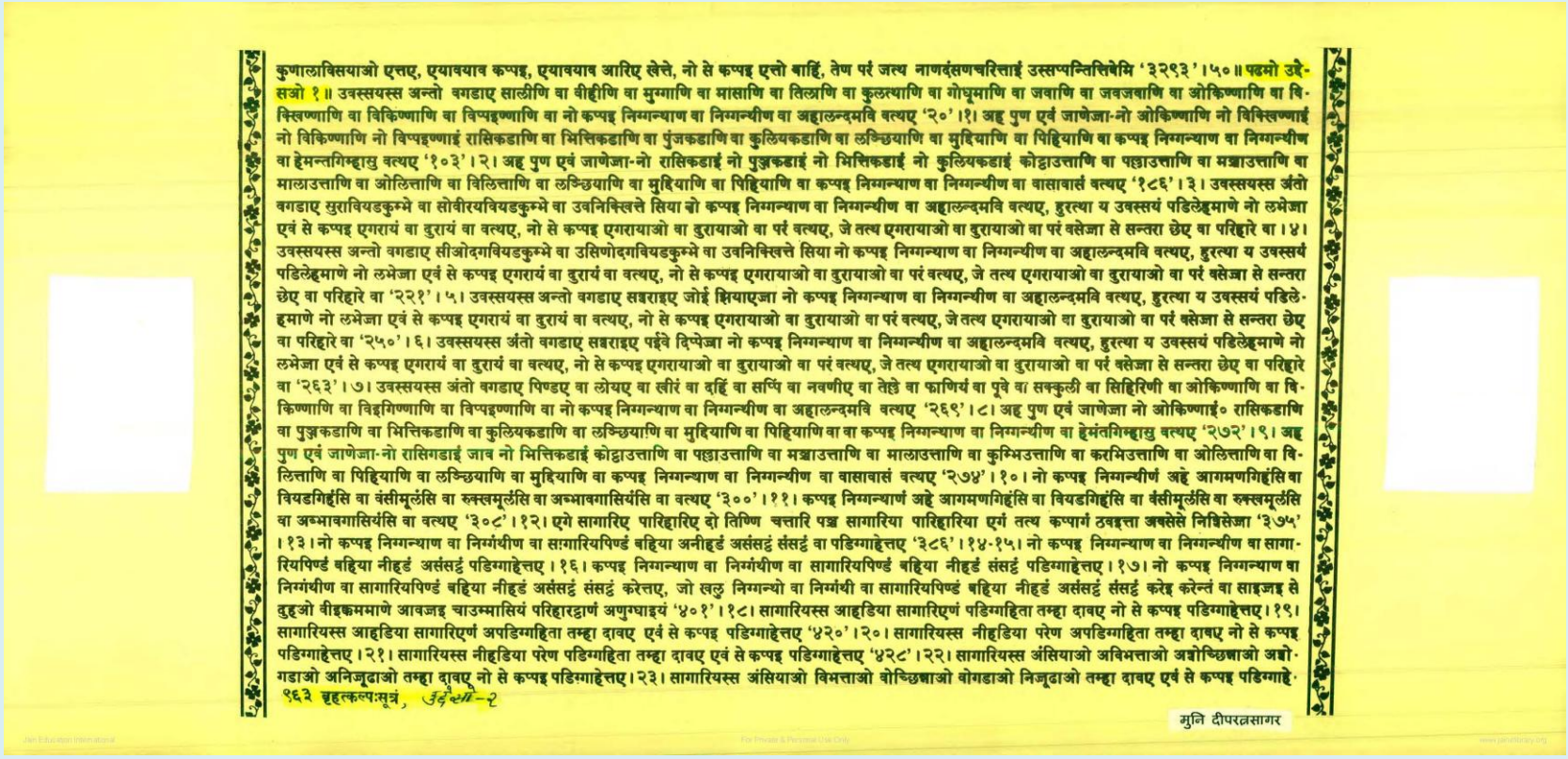

कुणालाविसयाओ एत्तए, एयावयाव कप्पइ, एयावयाव आरिए खेत्ते, नो से कप्पइ एत्तो बाहिं, तेण परं जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पन्तित्तिबेमि ‘३२९३’।५०॥ पढमो उद्देसओ १॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सालीणि वा वीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा तिलाणि वा कुलत्थाणि वा गोधूमाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा ओकिण्णाणि वा विक्खिण्णाणि वा विकिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए ‘२०’।१। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो ओकिण्णाणि नो विक्खिण्णाइं नो विकिण्णाणि नो विप्पइण्णाइं रासिकडाणि वा भित्तिकडाणि वा पुंजकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु वत्थए ‘१०३’।२। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो रासिकडाइं नो पुञ्जकडाइं नो भित्तिकडाइं नो कुलियकडाइं कोट्ठाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए ‘१८६’।३। उवस्सयस्स अंतो वगडाए सुरावियडकुम्भे वा सोवीरयवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा।४। उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सीओदगवियडकुम्भे वा उसिणोदगवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ‘२२१’।५। उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सव्वराइए जोई झियाएज्जा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ‘२५०’।६। उवस्सयस्स अंतो वगडाए सव्वराइए पईवे दिप्पेज्जा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ‘२६३’।७। उवस्सयस्स अंतो वगडाए पिण्डए वा लोयए वा खीरं वा दहिं वा सप्पिं वा नवणीए वा तेल्ले वा फाणियं वा पूवे वा सक्कुली वा सिहिरिणी वा ओकिण्णाणि वा विकिण्णाणि वा विइगिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए ‘२६९’।८। अह पुण एवं जाणेज्जा नो ओकिण्णाइं० रासिकडाणि वा पुञ्जकडाणि वा भित्तिकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमंतगिम्हासु वत्थए ‘२७२’।९। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो रासिगडाइं जाव नो भित्तिकडाइं कोट्ठाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा कुम्भिउत्ताणि वा करभिउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा पिहियाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए ‘२७४’।१०। नो कप्पइ निग्गन्थीणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रुक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए ‘३००’।११। कप्पइ निग्गन्थाणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रुक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए ‘३०८’।१२। एगे सागारिए पारिहारिए दो तिण्णि चत्तारि पञ्च सागारिया पारिहारिया एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता अवसेसे निव्विसेज्जा ‘३७५’।१३।नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया अनीहडं असंसट्ठं संसट्ठं वा पडिग्गाहेत्तए ‘३८६’।१४-१५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं पडिग्गाहेत्तए।१६। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं संसट्ठं पडिग्गाहेत्तए।१७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेत्तए, जो खलु निग्गन्थो वा निग्गंथी वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेइ करेन्तं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ‘४०१’।१८। सागारियस्स आहडिया सागारिएणं पडिग्गहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।१९। सागारियस्स आहडिया सागारिएणं अपडिग्गहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ‘४२०’।२०। सागारियस्स नीहडिया परेण अपडिग्गहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।२१। सागारियस्स नीहडिया परेण पडिग्गहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ‘४२८’।२२। सागारियस्स अंसियाओ अविभत्ताओ अवोच्छिन्नाओ अवोगडाओ अनिज्जूढाओ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।२३। सागारियस्स अंसियाओ विभत्ताओ वोच्छिन्नाओ वोगडाओ निज्जूढाओ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहे-

९६३ बृहत्कल्पःसूत्रं, उद्देसो-२

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशक: २ आरब्ध:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [७४]

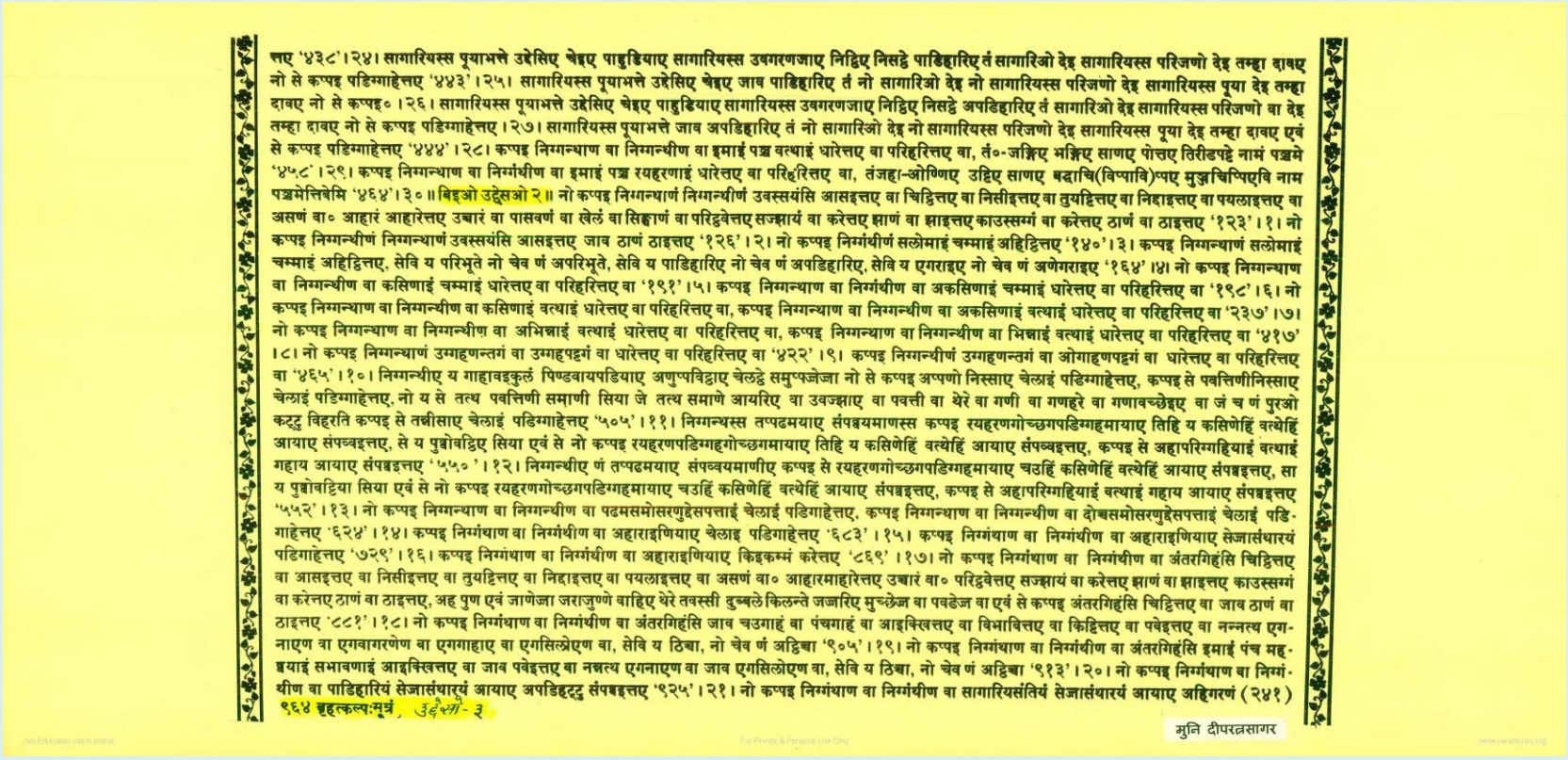

त्तए '४३८'।२४। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए तं सागारिओ देइ सागारियस्स परिजणो देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४३'।२५। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए जाव पाडिहारिए तं नो सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ०।२६। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे अपडिहारिए तं सागारिओ देइ सागारियस्स परिजणो वा देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।२७। सागारियस्स पूयाभत्ते जाव अपडिहारिए तं नो सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४४'।२८। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाई पञ्च वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तं०-जङ्गिए भङ्गिए साणए पोत्तए तिरीडपट्टे नामं पञ्चमे '४५८'।२९। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा इमाइं पञ्च रयहरणाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तंजहा-ओण्णिए उट्टिए साणए बव्वाचि(विप्पावि)प्पए मुञ्जचिप्पिएवि नाम पञ्चमेत्तिबेमि '४६४'।३०॥ बिइओ उद्देसओ २॥ नो कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थीणं उवस्सयंसि आसइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारं आहारेत्तए उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिङ्घाणं वा परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा करेत्तए ठाणं वा ठाइत्तए '१२३'।१। नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थाणं उवस्सयंसि आसइत्तए जाव ठाणं ठाइत्तए '१२६'।२। नो कप्पइ निग्गंथीणं सलोमाइं चम्माइं अहिट्ठित्तए '१४०'।३। कप्पइ निग्गन्थाणं सलोमाइं चम्माइं अहिट्ठित्तए, सेवि य परिभूते नो चेव णं अपरिभूते, सेवि य पाडिहारिए नो चेव णं अपडिहारिए, सेवि य एगराइए नो चेव णं अणेगराइए '१६४'।४। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कसिणाइं चम्माइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '१९१'।५। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा अकसिणाइं चम्माइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '१९८'।६। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कसिणाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अकसिणाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३७'।७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अभिन्नाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा भिन्नाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४१७'।८। नो कप्पइ निग्गन्थाणं उग्गहणन्तगं वा उग्गहपट्टगं वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४२२'।९। कप्पइ निग्गन्थीणं उग्गहणन्तगं वा ओगाहणपट्टगं वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४६५'।१०। निग्गन्थीए य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए चेलट्ठे समुप्पज्जेज्जा नो से कप्पइ अप्पणो निस्साए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए, कप्पइ से पवत्तिणीनिस्साए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए, नो य से तत्थ पवत्तिणी समाणी सिया जे तत्थ समाणे आयरिए वा उवज्झाए वा पवत्ती वा थेरे वा गणी वा गणहरे वा गणावच्छेइए वा जं च णं पुरओ कट्टु विहरति कप्पइ से तन्नीसाए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए '५०५'।११। निग्गन्थस्स तप्पढमयाए संपव्वयमाणस्स कप्पइ रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, से य पुव्वोवट्ठिए सिया एवं से नो कप्पइ रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं गहाय आयाए संपव्वइत्तए '५५०'।१२। निग्गन्थीए णं तप्पढमयाए संपव्वयमाणीए कप्पइ से रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, सा य पुव्वोवट्ठिया सिया एवं से नो कप्पइ रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं गहाय आयाए संपव्वइत्तए '५५२'।१३। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पढमसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा दोच्चसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए '६२४'।१४। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए चेलाइ पडिगाहेत्तए '६८३'।१५। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए सेज्जासंथारयं पडिगाहेत्तए '७२९'।१६। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए किइकम्मं करेत्तए '८६९'।१७। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा आसइत्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारमाहारेत्तए उच्चारं वा० परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा करेत्तए ठाणं वा ठाइत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा जराजुण्णे वाहिए थेरे तवस्सी दुब्बले किलन्ते जज्जरिए मुच्छेज्ज वा पवडेज्ज वा एवं से कप्पइ अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा जाव ठाणं वा ठाइत्तए '८८१'।१८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि जाव चउगाहं वा पंचगाहं वा आइक्खित्तए वा विभावित्तए वा किट्टित्तए वा पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा एगवागरणेण वा एगगाहाए वा एगसिलोएण वा, सेवि य ठिच्चा, नो चेव णं अट्ठिच्चा '९०५'।१९। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि इमाइं पंच महव्वयाइं सभावणाइं आइक्खित्तए वा जाव पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा जाव एगसिलोएण वा, सेवि य ठिच्चा, नो चेव णं अट्ठिच्चा '९१३'।२०। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं सेज्जासंथारयं आयाए अपडिहट्टु संपव्वइत्तए '९२५'।२१। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारियसंतियं सेज्जासंथारयं आयाए अहिगरणं (२४१)

९६४ बृहत्कल्पःसूत्रं, उद्देशो-३

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशकः ३ आरब्धः

प्रत सूत्रांक [२२]

दीप अनुक्रम [१०२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] "बृहत्कल्प" मूलं

कट्टु संपव्वइत्तए, कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारयं आयाए विगरणं कट्टु संपव्वइत्तए '९३०'।२२। इह खलु निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारिए वा सागारियसंतिए वा सेज्जासंथारए विप्पणसेज्जा (परिभट्ठे सिया) से य अणुगवेसियव्वे सिया, से य अणुगवेसमाणे लभेज्जा तस्सेव पडि(अणुप)दायव्वे सिया, से य अणुगवेसमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि उग्गहं अणुण्णवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '९६४'।२३। जद्दिवसं च णं समणा निग्गंथा सेज्जासंथारयं विप्पजहति तद्दिवसं च णं अवरे समणा निग्गंथा हव्वमागच्छेज्जा स चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं।२४। अत्थि या इत्थ केइ उवस्सयपरियावन्नए अचित्ते परिहरणारिहे स चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं '१०७८'।२५। से वत्थुसु अव्वावडेसु अव्वोगडेसु अपरपरिग्गहीएसु सच्चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं।२६। से वत्थूसु वावडेसु वोगडेसु परपरिग्गहीएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि उग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया अहालन्दमवि उग्गहं '११०४'।२७। से अणुकुड्डेसु वा अणुभित्तीसु वा अणुचरियासु वा अणुफरिहासु वा अणुपंथेसु वा अणुमेरासु वा सच्चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं '१११०'।२८। से गामंसि वा जाव रायहाणीए (संनिवेसंसि) वा बहिया सेण्णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूणं पडिनियत्तए, नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए, जो खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '११५५'।२९। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सव्वओ समंता सक्कोसं जोयणं उग्गहं ओगिण्हित्ताणं चिट्ठित्तएत्तिबेमि '११९२'।३०॥ तइओ उद्देसो ३॥ तओ अणुग्घाइया पन्नत्ता तंजहा-हत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे राइभोयणं भुञ्जमाणे '९२'।१। तओ पारंचिया पन्नत्ता तंजहा-दुट्ठे पारंचिए पमत्ते पारंचिए अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिए '१८१'।२। तओ अणवट्टप्पा पं० तं०-साहम्मियाणं तेन्नं करेमाणे परधम्मियाणं तेन्नं करेमाणे हत्थायालं दलमाणे '२६२'।३। तओ नो कप्पति पव्वावेत्तए तं०-पण्डए कीवे वाइए '३१४'।४। एवं मुण्डावेत्तए सिक्खावेत्तए सेहावित्तए उवट्ठावेत्तए संभुञ्जित्तए संवासित्तए '३२१'।५। तओ नो कप्पन्ति वाएत्तए तं०-अविणीए विगईपडिबद्धे अविओसवियपाहुडे, तओ कप्पन्ति वाएत्तए तं०-विणीए नो विगईपडिबद्धे विओसवियपाहुडे '३३५'।६। तओ दुस्सन्नप्पा पं० तं०-दुट्ठे मूढे वुग्गाहिए '३५८'।७। तओ सुस्सन्नप्पा पं० तं०-अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिए '३६०'।८। निग्गंथं च णं गिलायमाणं माया वा भगिणी वा धूया वा पलिस्सएज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।९। निग्गंथिं च णं गिलायमाणिं पिया वा भाया वा पुत्ते वा पलिस्सएज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '३८७'।१०। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा० पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता चउत्थं पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्तए, से य आहच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्तमन्ते बहुफासुए पएसे (थंडिले) पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दल (अणुप्पदे)माणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।११। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा० परं अद्धजोयणमेराए उवाइणावेत्तए, से य आहच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्तमन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '४३९'।१२। निग्गन्थेण य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठेणं अन्नयरे अचित्ते अणेसणिज्जे पाणभोयणे पडिग्गहिए सिया अत्थि य इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए कप्पइ से तस्स दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नत्थि य इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए (अणुप्पदेज्जा) एगन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '४६३'।१३। जे कडे कप्पट्ठियाणं कप्पइ से अकप्पट्ठियाणं नो से कप्पइ कप्पट्ठियाणं, जे कडे अकप्पठियाणं नो से कप्पइ कप्पठियाणं कप्पइ से अकप्पट्ठियाणं, कप्पे ठिया कप्पठिया अकप्पे ठिया अकप्पट्ठिया '४८६'।१४। भिक्खू य गणाओ अवक्कम इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ताणं आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्तिं वा थेरं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उपसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५७४'।१५। गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता

९६५ बृहत्कल्पःसूत्रं, उद्देशो-४

मुनि दीपरत्नसागर

For Private & Personal Use Only

अत्र उद्देशक: ४ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [१६]

दीप अनुक्रम [१२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] "बृहत्कल्प" मूलं

आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। १६। आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५७७'। १७। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्तिं वा थेरं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए , ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५९४'। १८। गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता ० विहरित्तए कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। १९। आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता ० विहरित्तए, कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। २०। भिक्खू य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरन्ति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता०। २१। गणावच्छेइए य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता ० उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियं वा उवज्झायं वा उद्दिसावेत्तए '६१७'। २२। आयरियउवज्झाए इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसा-

९६६ बृहत्कल्पःसूत्रं , उद्देसो - ४

मुनि दीपरत्नसागर

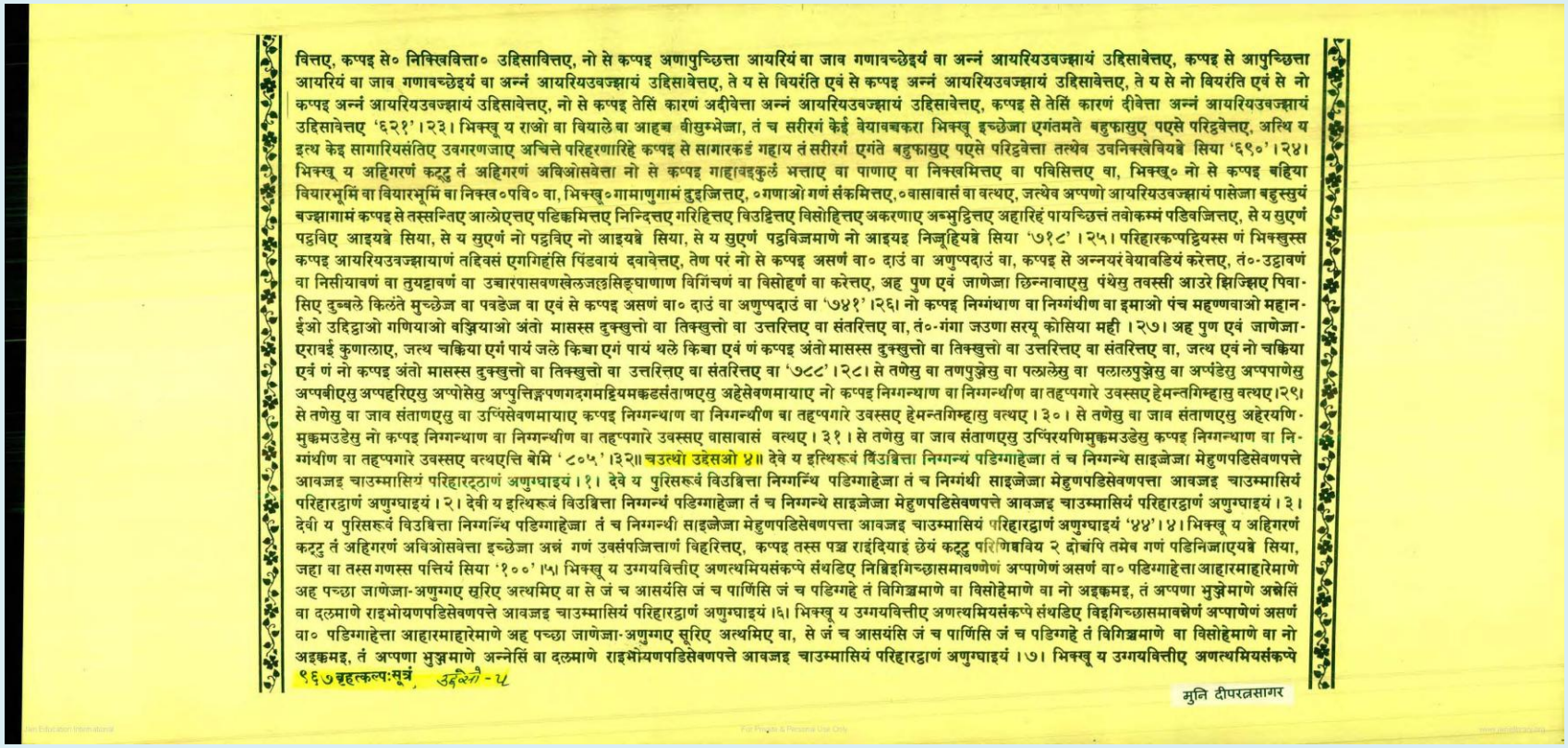

आगम (३५)	“बृहत्कल्प” - छेदसूत्र-२ (मूलं) ---------- उद्देश: [४] -- मूलं [२३] ----------
प्रत सूत्रांक [२३] दीप अनुक्रम [१६५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

वित्तए, कप्पइ से० निक्खिवित्ता० उद्दिसावित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए ‘६२१’।२३। भिक्खू य राओ वा वियाले वा आहच्च वीसुम्भेज्जा, तं च सरीरगं केई वेयावच्चकरा भिक्खू इच्छेज्जा एगंतमते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्तए, अत्थि य इत्थ केइ सागारियसंतिए उवगरणजाए अचित्ते परिहरणारिहे कप्पइ से सागारकडं गहाय तं सरीरगं एगंते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्ता तत्थेव उवनिक्खेवियव्वे सिया ‘६९०’।२४। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता नो से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, भिक्खू० नो से कप्पइ बहिया वियारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्ख०पवि० वा, भिक्खू० गामाणुगामं दुइज्जित्तए, ०गणाओ गणं संकमित्तए, ०वासावासं वा वत्थए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झायं पासेज्जा बहुस्सुयं बज्झागामं कप्पइ से तस्सन्तिए आलोएत्तए पडिक्कमित्तए निन्दित्तए गरिहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए, से य सुएणं पट्ठविए आइयव्वे सिया, से य सुएणं नो पट्ठविए नो आइयव्वे सिया, से य सुएणं पट्ठविज्जमाणे नो आइयइ निज्जूहियव्वे सिया ‘७१८’।२५। परिहारकप्पट्ठियस्स णं भिक्खुस्स कप्पइ आयरियउवज्झायाणं तद्दिवसं एगगिहंसि पिंडवायं दवावेत्तए, तेण परं नो से कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा, कप्पइ से अन्नयरं वेयावडियं करेत्तए, तं०-उट्ठावणं वा निसीयावणं वा तुयट्टावणं वा उच्चारपासवणखेलजल्लसिङ्घाणाण विगिंचणं वा विसोहणं वा करेत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा छिन्नावाएसु पंथेसु तवस्सी आउरे झिज्झिए पिवासिए दुब्बले किलंते मुच्छेज्ज वा पवडेज्ज वा एवं से कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा ‘७४१’।२६। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ पंच महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वञ्जियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, तं०-गंगा जउणा सरयू कोसिया मही ।२७। अह पुण एवं जाणेज्जा-एरावई कुणालाए, जत्थ चक्किया एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा एवं णं कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, जत्थ एवं नो चक्किया एवं णं नो कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा ‘७८८’।२८। से तणेसु वा तणपुञ्जेसु वा पलालेसु वा पलालपुञ्जेसु वा अप्पंडेसु अप्पपाणेसु अप्पबीएसु अप्पहरिएसु अप्पोसेसु अप्पुत्तिङ्गपणगदगमट्टियमक्कडसंताणएसु अहेसेवणमायाए नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए।२९। से तणेसु वा जाव संताणएसु वा उप्पिंसेवणमायाए कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए।३०। से तणेसु वा जाव संताणएसु अहेरयणिमुक्कमउडेसु नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए वासावासं वत्थए।३१। से तणेसु वा जाव संताणएसु उप्पिंरयणिमुक्कमउडेसु कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा तहप्पगारे उवस्सए वत्थएत्ति बेमि ‘८०५’।३२॥ चउत्थो उद्देसओ ४॥ देवे य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।१। देवे य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थिं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गंथी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।२। देवी य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।३। देवी य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थिं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ‘४४’।४। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ तस्स पञ्च राइंदियाइं छेयं कट्टु परिणिव्वविय २ दोच्चंपि तमेव गणं पडिनिज्जाएयव्वे सिया, जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं सिया ‘१००’।५। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए निव्विइगिच्छासमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।६। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।७। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे

९६७ बृहत्कल्पःसूत्रं, उद्देसो - ५

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: ५ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [८]

दीप अनुक्रम [१५०]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] "बृहत्कल्प" मूलं

असंथडिए निव्विइगिच्छसमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभो० चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।८। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे असंथडिए विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहंसि तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा न अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१४५'।९। इह खलु निग्गन्थस्स वा निग्गन्थीए वा राओ वा वियाले वा सपाणे सभोयणे उग्गाले आगच्छेज्जा तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं उग्गिलित्ता पच्चोगिलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१७७'।१०। निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहंसि से पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा तं च संचाएइ विगिञ्चित्तए वा विसोहित्तए वा तओ पुव्वामेव आलोइय २ विसोहिय २ तओ संजयामेव भुञ्जेज्ज वा पिएज्ज वा, तं च नो संचाएइ विगिञ्चत्तए वा विसोहेत्तए वा तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे थंडिले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२१३' ।११। निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहगंसि दए वा दगरए वा दगफुसिए वा परियावज्जेज्जा से य उसिणे भोयणजाए परिभोत्तव्वे सिया, से य नो उसिणे सीए भोयणजाए तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे थंडिले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२३५'।१२। निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा अन्नयरं इन्दियजायं परामुसेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा हत्थकम्मपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।१३। निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा अन्नयरंसि सोयंसि ओगाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२४५'।१४। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए होत्तए।१५। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा।१६। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा।१७। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गामाणुगामं दूइज्जित्तए।१८। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए वासावासं वत्थए '२५१'।१९। नो कप्पइ निग्गन्थीए अचेलियाए होत्तए '२५६'।२०। नो कप्पइ निग्गन्थीए अपाइयाए होत्तए '२६०'।२१। नो कप्पइ निग्गन्थीए वोसट्ठकाइयाए होत्तए '२६१'।२२। नो कप्पइ निग्गन्थीए बहिया गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहाए एगपाइयाए ठिच्चा आयावणाए आयावेत्तए।२३। कप्पइ से उवस्सयस्स अंतो वगडाए संघाडिपडिबद्धाए पलंबियबाहि(हु)याए समतलपाइयाए ठिच्चा आयावणाए आयावेत्तए २६९'।२४। नो कप्पइ निग्गन्थीए ठाणाइयाए होत्तए।२५। नो कप्पइ निग्गन्थीए पडिमट्ठाइयाए होत्तए।२६। नो कप्पइ निग्गन्थीए उक्कुडियासणियाए होत्तए।२७। नो कप्पइ निग्गन्थीए नेसिज्जियाए होत्तए।२८। नो कप्पइ निग्गन्थीए वीरासणियाए होत्तए।२९। नो कप्पइ निग्गन्थीए दण्डासणियाए होत्तए।३०। नो कप्पइ निग्गन्थीए लगण्डसाइयाए होत्तए।३१। नो कप्पइ निग्गन्थीए ओमंथियाए होत्तए।३२। नो कप्पइ निग्गन्थीए उत्ताणियाए होत्तए।३३। नो कप्पइ निग्गन्थीए अम्बखुज्जियाए होत्तए।३४। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगपासियाए होत्तए '२८१'।३५। नो कप्पइ निग्गन्थीणं आउञ्चणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।३६। कप्पइ निगन्थाणं आउञ्चणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।३७। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सावस्सयंसि आसणंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा आसइत्तए वा तुयट्टित्तए वा।३८। कप्पइ निग्गन्थाणं सावस्सयंसि आसणंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा आसइत्तए वा तुयट्टित्तए वा।३९। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सविसाणंसि फलगंसि वा पीढंसि वा जाव तुयट्टित्तए वा।४०। कप्पइ निग्गन्थाणं जाव तुयट्टित्तए वा '२८९'।४१। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४२। कप्पइ निग्गन्थाणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९०'।४३। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टया पायकेसरिया धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४४। कप्पइ निग्गन्थाणं सवेण्टया पायकेसरिया धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९१'।४५। नो कप्पइ निग्गन्थीणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४६। कप्पइ निग्गन्थाणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९२'।४७। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोयं आइत्तए वा आयमित्तए वा नन्नत्थ आगाढानागाढेसु रोगायङ्केसु '३१२'।४८। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासियस्स आहारस्स जाव तयप्पमाणमेत्तमवि भूइप्पमाणमेत्तमवि बिंदुप्पमाणमेत्तमवि आहारमाहारेत्तए, नन्नत्थ आगाढानागाढेसु रोगायङ्केसु '३२८'।४९। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएणं आलेवणजाएणं गायाइं (२४२)

९६८ बृहत्कल्पःसूत्रं, उद्देसो-५

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

प्रत सूत्रांक [५३]

दीप अनुक्रम [१९५से -२१५]

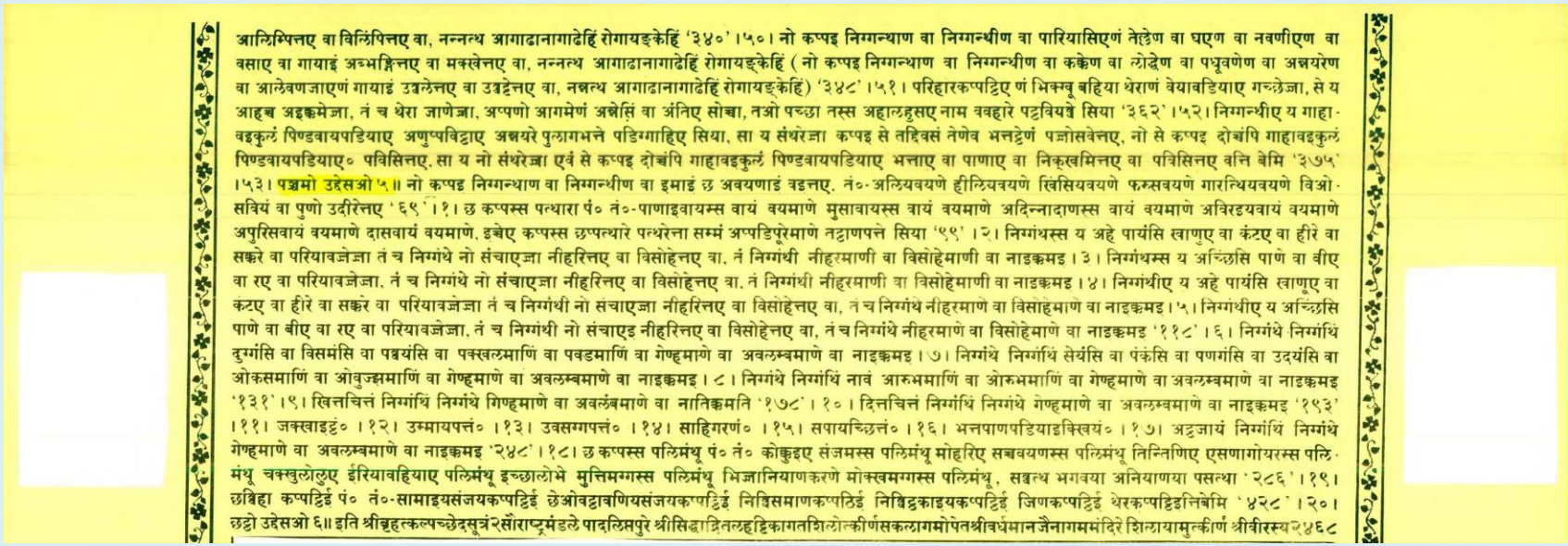

आलिम्पिनए वा विलिंपिनए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं '३४०'।५०। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएणं नेहेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा गायाइं अब्भङ्गित्तए वा मक्खेत्तए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं (नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कक्केण वा लोद्धेण वा पधूवणेण वा अन्नयरेण वा आलेवणजाएणं गायाइं उव्वलेत्तए वा उव्वट्टेत्तए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं) '३४८'।५१। परिहारकप्पट्ठिए णं भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, से य आहच्च अइक्कमेज्जा, तं च थेरा जाणेज्जा, अप्पणो आगमेणं अन्नेसिं वा अंतिए सोच्चा, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्ठवियव्वे सिया '३६२'।५२। निग्गन्थीए य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए अन्नयरे पुलागभत्ते पडिग्गाहिए सिया, सा य संथरेज्जा कप्पइ से तद्दिवसं तेणेव भत्तट्ठेणं पज्जोसवेत्तए, नो से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए० पविसित्तए, सा य नो संथरेज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वत्ति बेमि '३७५'।५३। पञ्चमो उद्देसओ ५॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं छ अवयणाइं वइत्तए, तं०-अलियवयणे हीलियवयणे खिंसियवयणे फरुसवयणे गारत्थियवयणे विओसवियं वा पुणो उदीरेत्तए '६९'।१। छ कप्पस्स पत्थारा पं० तं०-पाणाइवायस्स वायं वयमाणे मुसावायस्स वायं वयमाणे अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे अविरइयवायं वयमाणे अपुरिसवायं वयमाणे दासवायं वयमाणे, इच्चेए कप्पस्स छप्पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मं अप्पडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते सिया '९९'।२। निग्गंथस्स य अहे पायंसि खाणुए वा कंटए वा हीरे वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथे नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ।३। निग्गंथस्स य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथे नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ।४। निग्गंथीए य अहे पायंसि खाणुए वा कंटए वा हीरे वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथी नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं च निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ।५। निग्गंथीए य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथी नो संचाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं च निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ '११८'।६। निग्गंथे निग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पव्वयंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ।७। निग्गंथे निग्गंथिं सेयंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदयंसि वा ओकसमाणिं वा ओवुज्झमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '१३१'।९। खित्तचित्तं निग्गंथिं निग्गंथे गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा नातिक्कमति '१७८'।१०। दित्तचित्तं निग्गंथिं निग्गंथे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '१९३'।११। जक्खाइट्ठं०।१२। उम्मायपत्तं०।१३। उवसग्गपत्तं०।१४। साहिगरणं०।१५। सपायच्छित्तं०।१६। भत्तपाणपडियाइक्खियं०।१७। अट्ठजायं निग्गंथिं निग्गंथे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '२४८'।१८। छ कप्पस्स पलिमंथू पं० तं० कोकुइए संजमस्स पलिमंथू मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू निन्तिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू चक्खुलोलुए ईरियावहियाए पलिमंथू इच्छालोभे मुत्तिमग्गस्स पलिमंथू भिज्जानियाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू, सव्वत्थ भगवया अनियाणया पसत्था '२८६'।१९। छव्विहा कप्पट्ठिई पं० तं०-सामाइयसंजयकप्पट्ठिई छेओवट्ठावणियसंजयकप्पट्ठिई निव्विसमाणकप्पठिई निव्विट्ठकाइयकप्पट्ठिई जिणकप्पट्ठिई थेरकप्पट्ठिइत्तिबेमि '४२८'।२०। छट्ठो उद्देसओ ६॥ इति श्रीबृहत्कल्पच्छेदसूत्रं२सौराष्ट्रमंडले पादलिप्तपुरे श्रीसिद्धाद्रितलहट्टिकागतशिलोत्कीर्णसकलागमोपेतश्रीवर्धमानजैनागममंदिरे शिलायामुत्कीर्णं श्रीवीरस्य२४६८

अत्र उद्देशक: ६ आरब्ध: एवं परिसमाप्त:

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र ३४)

“बृहत्कल्प” परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

35

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“बृहत्कल्प-छेदसूत्र” [मूलं एव]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“बृहत्कल्प” मूल” नामेण

परिसमाप्त:

Remember it’s a Net Publications of ‘jain_e_library’s’